प्रमाणपत्र

प्रा.डा.मीना प्रभाकर खाडिलकर,
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग,
श्रीमती चंपाबेन बालचंद शाह महिला
महाविद्यालय,
सांगली ।

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रा.हणमंत महादेव सोहनी ने शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर की एम्.फिल.(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध " विष्णु प्रभाकर की कहानियों में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन " मेरे निर्देशन में परिश्रम के साथ एवं सफलता पूर्वक पूरा किया है । जो तथ्य लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किए गए हैं वे मेरी जानकारी के अनुसार सही है । इस शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ । मैं संस्तुति करती हूँ कि इस लघु शोध-प्रबन्ध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाय ।

शोध निर्देशिका
मीना खाडिलकर
(M.P.Khadilkar)
(प्रा.डा.मीना प्र.खाडिलकर)

सांगली ।
दिनांक :१९-:१२:१९९४ ।

प्राक्कथन

विष्णु प्रभाकर जी का व्यक्तित्व वस्तुत: बहुमुखी है। उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में कहानी, उपन्यास, नाटक, जीवनी, एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, बालसाहित्य आदि विविध विधाओं पर लेखनी चलाई है। जब मैंने बी.ए. में विष्णु प्रभाकर जी की 'जज का फैसला' कहानी पढी तब यह पता चला कि विष्णु प्रभाकर जी एक सामाजिक कहानीकार है। तथा वे समस्या प्रधान कहानीकार भी है। यह कहानी पढने के बाद उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को जानने की भावना मेरे मन में जाग उठी। मेरे जैसे सामान्य छात्र तो विष्णु प्रभाकर जी जैसे महान साहित्यकार की समी कृति पर अपने विचारों को प्रकट नहीं कर सकता। इसलिए मैंने उनके कुछ कहानी साहित्य को चून कर उनमें चित्रित समस्याओं को लेकर अपने लघु शोध-प्रबन्ध का विषय बनाया।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का अनुसन्धान करते समय मेरे सामने निम्नलिखित प्रश्न निर्माण हुए --

१) विष्णु प्रभाकर जी का व्यक्तित्व किस प्रकार का था ? तथा उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन में कौन-कौन-सी विधा पर लेखनी चलाई है ?

२) विष्णु प्रभाकर जी की कहानी किस धरातल पर आधारित है ?

३) विष्णु प्रभाकर जी की कहानियों में कौन-कौन सी समस्याएँ चित्रित हुई हैं ?

४) विष्णु प्रभाकर जी की कहानियों की कौन-कौन-सी विशेषताएँ उद्घाटित हुई है ?

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर पाने की कोशिश प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध में की है।

अध्ययन की सुविधा के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का विभाजन चार अध्यायों में किया है।

प्रथम अध्याय -- विष्णु प्रभाकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व।
द्वितीय अध्याय - विष्णु प्रभाकर की कहानियों का सामान्य परिचय।
तृतीय अध्याय - विष्णु प्रभाकर की कहानियों में चित्रित विविध समस्याएँ।
चतुर्थ अध्याय - विष्णु प्रभाकर की कहानियों की विशेषताएँ।

उ प सं हा र

उपसंहार में प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध के अध्यायों का अनुसंधान करते समय जो निष्कर्ष हात लगे वे निष्कर्ष मैंने उपसंहार में देने की चेष्टाएँ की है।

ऋण निर्देश

इस कार्य को पूर्ण बनाने में जिन-जिन विद्वानों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं मेरा आद्य कर्तव्य समझाता हूँ। इस लघु शोध - प्रबन्ध का मार्गदर्शन करने में श्रध्देय गुरुवर्या प्रा.डा.मीना खाडिलकर जी का अनमोल योगदान मिला। अपने कार्य में व्यस्त होते हुए भी उन्होंने हर समय बडी तत्परता और तनमयता से मौलिक समय निकालकर मार्गदर्शन किया। तथा उन्होंने अपनी निजी ग्रन्थालयों में से मुझे जिन किताबों की आवश्यकता थी वे समय-समय पर देकर सहाय्यता की है। आपके सहयोग के बिना यह कार्य पूर्ण होने की कल्पना ही नहीं कि जा सकती थी। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध आपही की सहाय्यता और निर्देशन का फल है। अत: मैं उनका हृदय से ऋणी हूँ।

प्रा.डा.वसन्त मोरे जी तथा प्रा.डा.के.पी.शहा इनके सहयोगसे मेरा यह कार्य पूरा हुआ इस लिए मैं उनका ऋणी हूँ।

उनके साथ ही मेरे श्रध्देय गुरुवर्य प्रा.डा.पी.एस.पाटील, प्रा.डा.अर्जून चव्हाण, प्राचार्य आय.एम.मुजावर (न्यू कॉलेज मुरगुड),प्राचार्य व्ही.आर. अम्र्यंकर (स.का.पाटील सिन्धुदुर्ग महाविद्यालय, मालवण,सिन्धुदुर्ग) आदि का सह्योग मिला । इसलिए मैं उनका ऋणी हूँ ।

इसके साथ-साथ प्रा.धनश्याम खानोलकर,प्रा.कर्णिक ,प्रा.श्रीरंग मंडले, प्रा. राम्माऊ काटकर,प्रा.मदन शिन्दे, प्रा.खरात,प्रा.क्षीरसागर ,प्रा.सौ.प्रज्ञा नायगावकर,प्रा.सौ.भारती सामंत (तेंडुलकर), प्रा.कु.वंदना सामंत, प्रा.राजू मंडलीक, प्रा.महादेव बैंडके,प्रा.सुरेश दिवाण,आदि का सहकार्य मिला । उनका भी मैं ऋणी हूँ ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय के ग्रंथपाल तथा मालवण कॉलेज के ग्रंथपाल श्री पारधी,न्यू कॉलेज मुरगुड के ग्रंथपाल श्री सातपुते आदि का भी मैं ऋणी हूँ ।

इस शोध कार्य में मेरे सहकारी मित्र प्रा.सुरज वाघमारे (तहसिलदार), प्रा.गणपत नागरे, प्रा.अनिल सालुंखे,कै.प्रा.बाळासाहेब चव्हाण (आटपाडी कॉलेज) प्रा.जयंत कुलकर्णी, अंकुश सोहनी,आप्पा लांडगे, निशिकांत धनवडे, प्रा.श्रीमंत मोरे, प्रा.काशीनाथ कटकोळे,प्रा.सर्जेराव मोसले,आदि का सहकार्य मिला उनका आभार प्रकट करना मेरा दाईत्व है । टंकलेखन करणेवाले श्री बाळकृष्ण रा.सावंत,कोल्हापूर उनका मैं अभारी हूँ ।

मेरे पुज्य माता-पिता,भाई-बहन का पर्याप्त सहकार्य मिला । जिसकी बदौलत से मैं अपना यह लघु शोध-प्रबन्ध पूरा कर सका । उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ । अन्त में उन सब के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझाता हूँ, जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य को पूरा करने के लिए प्रोत्साहन ,प्रेरणा और सहायता की उन सभी का मैं आभारी हूँ ।

शोध-छात्र

आटपाडी । दि.१९.१२.१९९४ । प्रा.हणमंत महादेव सोहनी।